विचार बिन्दु

गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई गलती को मान लेना और इस प्रकार आचरण करना कि फिर गलती न हो, मर्दानगी है। –महात्मा गाँधी

सड़क सुरक्षा को अपनाकर अपने जीवन को सुखद बनाएं

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, आम जनता में खासतौर से नये आयु वर्ग के लोगों में अधिक जागरुकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरुकता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा गया है। सड़क दुर्घटना, चोट और मृत्यु आज के दिनों में बहुत आम हो चला है। सड़क पर ऐसी दुर्घटनाओं की मुख्य वजह लोगों द्वारा सड़क यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा उपायों की अनदेखी है। गलत दिशा में गाड़ी चलाना, सड़क सुरक्षा नियमों और उपायों में कमी, तेज गति, नशे में गाड़ी चलाने आदि । सड़क हादसों की संख्या को घटाने के लिये उनकी सुरक्षा के लिये सभी सड़क का इस्तेमाल करने वालों के लिये सरकार ने विभिन्न प्रकार के सड़क यातायात और सड़क सुरक्षा नियम बनाये हैं। हमें उन सभी नियमों और नियंत्रकों का पालन करना चाहिये जैसे रक्षात्मक चालन की क्रिया, सुरक्षा उपायों का इस्तेमाल, गति सीमा को ठीक बनायें रखना, सड़क पर बने निशानों को समझना आदि।

सड़क परिवहन और रोजगार मंत्रालय के मुताबिक आज की दुनिया में सड़क और परिवहन जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में एक सड़क उपयोगकर्ता है। वर्तमान परिवहन प्रणाली ने दूरियों को कम कर दिया है लेकिन इसने दूसरी ओर जीवन के जोखिम को बढ़ा दिया है। हर साल सड़क दुर्घटनाओं में लाखों लोगों की जान चली जाती है और करोड़ों लोग गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं। भारत में ही हर साल लगभग अस्सी हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं जो पूरी दुनिया में होने वाली कुल मृत्यु का तेरह प्रतिशत है। अधिकांश दुर्घटनाओं में चालक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ज्यादातर मामलों में दुर्घटनाएं या तो लापरवाही के कारण होती हैं या सड़क उपयोगकर्ता की सड़क सुरक्षा जागरूकता की कमी के कारण होती हैं। इसलिए, सड़क सुरक्षा शिक्षा जीवित रहने के किसी भी अन्य बुनियादी कौशल की तरह ही आवश्यक है।

यातायात पीड़ित वो लोग होते हैं जो कि हर साल सड़क हादसे में मारे जाते हैं और इनमे 5 साल से लेकर 30 वर्ष की आयु सीमा के लोग सबसे ज्यादा यातायात पीड़ित का शिकार बनते हैं। कई बार लोग अपनी गलती से जान गवाते है और कई बार लोग दूसरे की गलती से जान गवाते है। सड़क यातायात पीड़ितों के लिए विश्व स्मरण दिवस पर हर साल आकड़े देखे जाते हैं कि पहले के मुकाबले इस साल कितने लोग सड़क हादसे के शिकार बने है। इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके पीड़ितों को सहानुभूति प्रदान की जाती है साथ ही सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाई जा सके जिसके परिणामस्वरूप जीवन बचाने की कार्यवाई को बढ़ावा दिया जा सके।

सड़क पर वाहन चलाते समय हमारी गलतियों के कारण जहां हम खुद जोखिम मोल लेते है वहां निर्दोष लोगों को भी अपना शिकार बनाते है। सड़क पर जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चोट या मृत्यु का खतरा होता है। विशेषकर पैदल यात्री, मोटर यात्री, साइकिल चालक, यात्री आदि। बच्चे से बुजुर्ग तक हर किसी को सड़क यातायात नियमों के बारे में अच्छी तरह से पता होना चाहिए, तभी हम सड़क दुर्घटनाओं से खुद को सुरक्षित रख पाएंगे। सड़क सुरक्षा, सुरक्षित ड्राइविंग के निर्देश और विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करता है। यह दिवस सड़क दुर्घटनाओं के मामले में उपलब्ध प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं और पीड़ितों की सुरक्षा के लिए उपलब्ध न्यायिक कानूनों के बारे में कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करता है तथा सड़क दुर्घटना के समय अच्छे मददगार व्यक्ति को पीड़ित की मदद करने पर सम्मानित भी किया जाता हैं।

सड़क हादसों की संख्या को घटाने के लिये उनकी सुरक्षा के लिये सभी सड़क का इस्तेमाल करने वालों के लिये सरकार ने विभिन्न प्रकार के सड़क यातायात और सड़क सुरक्षा नियम बनाये हैं। हमें उन सभी नियमों और नियंत्रकों का पालन करना चाहिये जैसे रक्षात्मक चालन की क्रिया, सुरक्षा उपायों का इस्तेमाल, गति सीमा को ठीक बनायें रखना, सड़क पर बने निशानों को समझना आदि।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पिछले साल वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह के दौरान प्रस्तुत एक रिपोर्ट अनुसार वैश्विक स्तर पर सड़क दुर्घटनाओं में प्रति वर्ष 1.35 मिलियन से अधिक मौतें होती हैं और 50 मिलियन से अधिक लोगों को गंभीर शारीरिक चोटें आती हैं। सड़क हादसे भारत जैसे विकासशील देश के लिए चुनौती बने हुए हैं। भारत सरकार ने सड़क हादसों में 50 प्रतिशत मौतों में कमी का लक्ष्य निर्धारित किया था मगर इसके उलट मौतों का आंकड़ा बढ़ता ही रहा है। भारत में होने वाली सड़क दुर्घटनाओं में हर साल लाखों की संख्या में लोग अपनी जान गवां देते हैं। साल 2023 में सड़क हादसों में 1.73 लाख से ज्यादा मौतें हुईं यानि हर दिन औसतन 474 मौतें हुईं और हर तीन मिनट में एक जान गई। पिछले साल सड़क हादसों में करीब 4.63 लाख लोग घायल हुए थे। वर्ल्ड बैंक के आंकड़ों के अनुसार भारत में दुनिया के केवल एक फीसदी वाहन हैं इसके बावजूद पूरे विश्व में होने वाले हादसों का 11 फीसदी देश में ही घटित होते हैं। विश्व बैंक के अनुसार, 18-45 आयु वर्ग के लोगों की सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर सर्वाधिक 69 प्रतिशत है। इसके अलावा 54 प्रतिशत मौतें और गंभीर चोटें मुख्य रूप से संवेदनशील वगरे जैसे पैदल यात्री, साइकिल चालक और दोपहिया वाहन सवार आदि में देखी जाती हैं। भारत में 5-29 वर्ष आयु-वर्ग के बच्चों और युवा वयस्कों में सड़क दुर्घटना मृत्यु का सबसे बड़ा कारण है।

एक अधिकृत जानकारी के मुताबिक देश भर में होने वाली कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 76 प्रतिशत दुर्घटनाएं ओवरस्पीडिंग और गलत साइड पर गाड़ी चलाने जैसे यातायात नियमों के उल्लंघन के कारण होती हैं। कुल सड़क दुर्घटनाओं में दोपहिया वाहनों और पैदल चलने वालों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। सड़क सुरक्षा को लेकर हमें अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। हेलमेट पहनने, सीट बेल्ट लगाने और अन्य सुरक्षा मानकों का पालन करने के प्रति हमें जागरूक रहना चाहिए। मीडिया सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं। सड़क सुरक्षा को लेकर समाज का मानस और व्यवहार बदलने के प्रयास करना होगा। सड़क दुर्घटनाएं ज्यादातर हमारी गलती से होती हैं। अगर हम नियमों का पालन करें तो सड़क दुर्घटनाओं को कम कर सकते हैं। वाहन चलाने को लेकर लापरवाह और अति आत्मविश्वास नहीं होना चाहिए। सीट बेल्ट और हेलमेट आपको गंभीर चोट से बचाते हैं।

सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है, आम जनता में खासतौर से नये आयु वर्ग के लोगों में अधिक जागरुकता लाने के लिये इसे शिक्षा, सामाजिक जागरुकता आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों से जोड़ा जाना नितांत आवश्यक है। सड़क दुर्घटना, चोट और मृत्यु आज के दिनों में बहुत आम हो चला है। सड़क पर ऐसी दुर्घटनाओं की मुख्य वजह लोगों द्वारा सड़क यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा उपायों की अनदेखी है। गलत दिशा में गाड़ी चलाना, सड़क सुरक्षा नियमों और उपायों में कमी, तेज गति, नशे में गाड़ी चलाने आदि । जान लेवा सड़क हादसों को रोकने के लिए जरूरी है कि सड़कों की स्थिति अच्छी हो, जन कल्याणकारी सरकार का यह दायित्व है कि वह उच्च गुणवत्ता युक्त सड़कों का निर्माण करें और क्षत-विक्षत सड़कों को दुरस्त करें ताकि वाहन किसी दुर्घटना का शिकार नहीं होवे।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राष्ट्रप्रेम, हिंदी भाषा, सनातनी विचार के सच्चे उत्तराधिकारी थे जस्टिस गिरधर मालवीय

बीएचयू के संस्थापक भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय के पौत्र एवं बीएचयू के कुलाधिपति जस्टिस गिरधर मालवीय का हमारे बीच से जाना देश और राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है। उन्होंने प्रयागराज में 18 नवंबर, 2024 को अंतिम सांस ली थी। उनके पिता पंडित गोविंद मालवीय स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद, राष्ट्रभक्त और वरिष्ठ राजनेता थे। राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सांप्रदायिक सद्भाव उन्हें अपने पिता पंडित मदन मोहन मालवीय से विरासत में मिली थी। अपने दादा और पिता की उसी विरासत को जस्टिस गिरधर मालवीय आजीवन संभाले रखे। जस्टिस मालवीय के मनोज मालवीय इकलौते पुत्र हैं, जो भारतीय पुलिस सेवा के पश्चिम बंगाल कैडर के वरिष्ठ अधिकारी रहे हैं तथा उनकी दीपाली प्रियदर्शी और रुचि भार्गव दो पुत्रीयां हैं।

जस्टिस मालवीय की शिक्षा बेसेंट थियोसोफिकल सोसायटी, वाराणसी में तथा 1957 में बी एच यू से एलएलबी की डिग्री प्राप्त की थी। वह 1988 से 1998 तक इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश रहे। वर्ष 218 से वे बीएचयू के चांसलर थे। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश जैसे गौरवमयी पद पर रहने के बावजूद भी वह प्रयागराज की छोटी बड़ी तमाम संस्थाओं से जुड़े रहे और उनके प्रत्येक भाषण में मां गंगा की सेवा, राष्ट्रभक्ति, समाज उत्थान, शिक्षा का प्रचार-प्रसार प्रमुखता से सुनने को मिलता था। जस्टिस गिरधर मालवीय का ज्यादा लगाव अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय से था। उनका जन्म बीएचयू परिसर में ही अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय के घर 14 नवंबर, 1936 को हुआ था। वह भाव विभोर होकर कहा करते थे, बी एच यू मेरा घर है। पंडित गिरधर मालवीय सत्य, अहिंसा, व्यायाम, कर्तव्य निष्ठा एवं सनातनी स्वभाव के थे, लेकिन अन्य धर्मों का भी समान रूप से आदर किया करते थे।

बी एच यू के एक प्रोफेसर के भर्ती के प्रसंग में जस्टिस मालवीय ने बड़ा रोचक और सराहनीय निर्णय सुनाया था। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के संस्कृत विद्या एवं धर्म विज्ञान संकाय में असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर डॉक्टर फिरोज खान की नियुक्ति वर्ष-2019 में हुई थी, लेकिन उनकी नियुक्ति को लेकर फैकल्टी के छात्र और कुछ शिक्षक आंदोलन कर रहे थे। उनका कहना था कि एक मुसलमान शिक्षक हम हिंदुओं को वेद-वेदांग और साहित्य कैसे पढ़ाएगा। इस समस्या का कोई उचित समाधान न देखकर तत्कालीन कुलपति ने जस्टिस मालवीय से इस मामले में सुझाव मांगा था। इस पर जस्टिस मालवीय ने कहा था कि बच्चों को जहां से भी मिले शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, उन्हें हिंदू-मुस्लिम ऐसा करके विरोध नहीं करना चाहिए। उन्होंने उदाहरण प्रस्तुत किया था कि भगवान राम शिक्षा प्राप्त करने के लिए लक्ष्मण को रावण के पास भेजा था। यदि डॉक्टर फिरोज खान की नियुक्ति सेलेक्शन कमेटी ने की है और उनको संस्कृत का विद्वान माना है तो, उनकी ज्वाइनिंग विभाग में होनी चाहिए।

परंतु दुर्भाग्य रहा कि छात्रों के

जस्टिस गिरधर मालवीय

विरोध के आगे विश्वविद्यालय प्रशासन को झुकना पड़ा था और डॉक्टर फिरोज खान उस विभाग में ज्वाइन नही कर सके। उन्हें पुन: विज्ञप्ति निकाल कर बीएचयू के संस्कृत विभाग में ज्वाइन कराया गया। जस्टिस मालवीय गंगा सेवा के प्रति हमेशा प्रतिबद्ध रहा करते थे। उन्होंने वर्ष-2016 में भागीरथ संकल्प श्रम संघ की स्थापना की थी। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी इस ध्येय वाक्य को हमेशा स्मरण करते हुए वह विश्वविद्यालय को स्वर्ग से भी महान मानते थे। उनका विश्वविद्यालय से बड़ा ही आत्मीय लगाव था। विश्वविद्यालय में उनका प्राय: आना-जाना होता रहता था। वर्ष 2019 में आयोजित बी एच यू के दीक्षांत समारोह की उन्होंने अध्यक्षता की थी और 16 दिसंबर, 2023 को अस्वस्थ रहते हुए भी वह व्हीलचेयर पर बैठकर दीक्षांत समारोह में भाग लिया था। दीक्षांत समारोह में बड़ी ही मुश्किल से वह अपने दोनों पैरों पर खड़े हो पाए और छात्रों को उनके जीवन का अनूठा मूल मंत्र समझाया था। वह बीएचयू में अंतिम बार वह 3 फरवरी, 2024 को लॉ कॉलेज के शताब्दी समारोह में बतौर पूर्व छात्र सम्मिलित हुए थे और उन्हें आनंद जी स्मृति शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया था। उन्होंने आशा व्यक्त किया था कि बी एच यू का लॉ कॉलेज देश का सबसे बड़ा लॉ कॉलेज के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए।

भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी प्रयागराज निवासी सुनील शुक्ला जस्टिस गिरधर मालवीय के संस्मरण का जिक्र करते हुए बताते हैं कि उनकी चिंता समाज के आखिरी पायदान पर बैठे हुये व्यक्ति की रहती थी। वह प्रयागराज की तमाम छोटी-बड़ी स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े रहे और उनका मार्गदर्शन किया करते थे। गंगा को स्वच्छ रखना वह अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य मानते थे। वह अपने जीवन में अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय को आदर्श मानते थे और बातों-बात में वह उनका उदाहरण देते और जिक्र किया करते थे।

वर्ष 2014 में जब नरेन्द्र मोदी वाराणसी से पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़े थे, उसमें एक प्रस्तावक के रूप में जस्टिस मालवीय भी थे। उनके निधन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुख व्यक्त किया और कहा कि गिरधर मालवीय के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। गंगा सफाई अभियान में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गिरधर मालवीय का निधन अत्यंत दुखद और शिक्षा जगत और देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनके निधन से बीएचयू में शोक की लहर दौड़ पड़ी और कुलपति सुधीर जैन ने कहा कि महामना और बी एच यू के बीच जस्टिस मालवीय एक जीवित कड़ी थे। वह विश्वविद्यालय के अभिभावक के रूप में समय-समय पर हम सभी का मार्गदर्शन किया करते थे। कुलपति ने उनके निधन को विश्वविद्यालय ही नहीं बल्कि निजी अपूरणीय क्षति बताया।

जस्टिस गिरधर मालवीय अपने हृदय की महानता के कारण शिक्षा एवं न्याय जगत में हमेशा याद किए जाएंगे। उन्हें सत्य, दया, न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वदा प्रिय था। करुणामयी हृदय, भूतानुकंपा, मनुष्य मात्र से द्वेष, शरीर, मन, वाणी में संयम, धर्म और देश के लिए सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास पूर्वक दूसरों को असंभव प्रतीत होने वाले कर्मों का प्रतिपादन, वेश-भूषा और आचार-विचार उन्हें अपने दादा पंडित मदन मोहन मालवीय से विरासत में मिली थी।

जस्टिस गिरधर मालवीय महामना की सांस्कृतिक विरासत, चाहे वह राष्ट्र प्रेम रहा हो, हिंदी भाषा, सनातनी विचार एवं शिक्षा के प्रति अटूट प्रेम एवं मूल्यों के सच्चे उत्तराधिकारी थे। उन्होंने अपने अंतिम दौर के समय एक साक्षात्कार में कहा था कि मुझे कोई बीमारी नहीं है, यह वृद्धावस्था है। इसका अंतिम इलाज मृत्यु है। उनके शुभचिंतक बताते हैं कि उनको अपने अंतिम समय में शरीर त्यागने का धीरे-धीरे आभास हो चला था, परंतु वे अपने राष्ट्र धर्म और उसकी प्रतिबद्धता से कभी विचलित नहीं हुए।

–डॉ. नरसिंह राम,
वाराणसी।

रणथम्भौर में तीन प्रदेशों के वन अधिकारियों की बैठक में चीता कॉरिडोर बनाने पर चर्चा

बैठक में तीन प्रदेश में 22 जिलों के करीब दो हजार किलोमीटर एरिया में देश का सबसे बड़ा चीता कॉरिडोर बनाने को लेकर चर्चा की

बौंली-बामनवास, (निसं)। रणथम्भौर के एक होटल में शुक्रवार को तीन प्रदेशों के वन अधिकारियों की बैठक में तीन प्रदेश में 22 जिलों के करीब दो हजार किलोमीटर एरिया में देश का सबसे बड़ा चीता कॉरिडोर बनाने को लेकर चर्चा के बाद निर्णय लिया गया।

बैठक में राजस्थान के मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक, मध्य प्रदेश के अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मुख्य वन संरक्षक एवं क्षेत्र निदेशक मुकुंदरा चीता प्रोजेक्ट, शिवपुरी के संचालक वन मंडल अधिकारी, कूनो राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण के प्रतिनिधि एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून के अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक के दौरान कूनो पार्क से राजस्थान की सीमा पर सटे इलाकों को जोड़कर कॉरिडोर बनाने की तैयारी शुरू की गई। बैठक में 22 जिलों के वन अधिकारियों व चीफ वाइल्ड वार्डन जुटे थे जिन्होंने चीतों को खुले जंगल में छोड़ने, जिले की सीमा से बाहर जाने पर उनकी देखरेख करने एवं व्यवस्थित भोजन सहित अन्य विषयों पर विस्तृत चर्चा कर प्लान तैयार करने का निर्णय लिया। इस मामले को लेकर राजस्थान सरकार ने चीता लैंडस्केप को लेकर घोषणा की थी। इस मुद्दे को लेकर राजस्थान व मध्यप्रदेश के वन अधिकारी बैठक कर चुके हैं, लेकिन कोई अंतिम फैसला नहीं हो पाया था। देश में सात दशक बाद लौटे चीतों को बचाने के लिए जलवायु से अनुकूलता पाने के बाद खुले जंगल में छोड़ने जिससे वह बाघ पैंथर व अन्य वन्य जीवों की तरह रह सके इस प्रकार की योजना तैयार की जा रही है।

■ चीतों को खुले जंगल में छोड़ने, जिले की सीमा से बाहर जाने पर उनकी देखरेख करने एवं व्यवस्थित भोजन सहित अन्य विषयों पर चर्चा कर प्लान तैयार करने का निर्णय लिया

रणथम्भौर के डीएफओ रामानंद भाकर ने बताया कि चीतों के संरक्षण को लेकर शुक्रवार को रणथम्भौर के होटल में चर्चा के बाद योजना तैयार की जा रही है। राजस्थान में सन् 1930 तक हाड़ौती के जंगलों में चीते मिला करते थे। चिता कॉरिडोर प्रोजेक्ट में राजस्थान के धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, बारा, झालावाड़, कोटा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बांसवाड़ा यह 10 जिले एवं मध्यप्रदेश के झाबुआ, रतलाम, मंदसौर, नीमच, अगरमालवा, राजगढ़, गुना, शिवपुरी, शोपुर व मुरैना की सीमा लगती है। उत्तर प्रदेश के झांसी व ललितपुर इस कॉरिडोर प्रोजेक्ट में शामिल है। वन्य जीव चीता का वजन करीब 35 से 65 किलो तक होता है एवं 10 से 12 वर्ष उनकी उम्र होती है। यह अक्सर दिन में ही अपना शिकार करते हैं। चीता वन प्राणियों में सबसे तेज दौड़ने वाला माना जाता है। यह 1 घंटे में 100 किलोमीटर तक दौड़ लगा सकता है।

आईआईटी-एनआईटी के समकक्ष कई अन्य इंजीनियरिंग संस्थानों के आवेदन शुरू

कोटा, (निसं)। देश की सबसे बड़ी इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा जेईई-मेन की आवेदन प्रक्रिया समाप्त होने के बाद अब बहुत से प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थानों की आवेदन प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष जेईई-मेन के पहले सेशन के लिए अब अधिक 13 लाख 95 हज़ार रजिस्ट्रेशन हुए थे।

एलन के कॅरियर काउंसलिंग एक्सपर्ट अमित आहूजा के अनुसार आईआईटी-एनआईटी के साथ साथ कई ऐसे बड़े एवं प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग शिक्षण संस्थान भी हैं, जिनसे बड़ी संख्या में स्टूडेंट्स डिग्री हासिल कर अपना भविष्य बनाते हैं। ऐसे स्टूडेंट्स जिनका जेईई-मेन में एनटीए स्कोर अच्छा नहीं आता है, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। ये विद्यार्थी समकक्ष अच्छे इंजीनियरिंग संस्थानों के लिए आवेदन कर सकते हैं। स्टूडेंट्स एनआईटी के अलावा कुछ प्रमुख संस्थान जैसे बिट्स पिलानी, वीआईटी वैल्लूर, मणिपाल मैंगलुर, आईपीयू दिल्ली, अमृता चौन्नई, एसआरएम चौन्नई, जामिया दिल्ली, क्युसेट केरला, एएमयू अलीगढ़ , कॉमेडके कर्नाटक, यूपीईएस देहरादून, सीएमआई चैन्नई, एनमेट मुम्बई, आईएसआई कोलकाता, ट्रिपल आईटी हैदराबाद, एलपीयू आदि से भी इंजीनियरिंग डिग्री हासिल कर सकते हैं।

■ उल्लेखनीय है कि इस वर्ष जेईई-मेन के पहले सेशन के लिए अब अधिक 13 लाख 95 हज़ार रजिस्ट्रेशन हुए थे

आहूजा के अनुसार इसके अलावा स्टूडेंट्स अपने-अपने स्टेट के इंजीनियरिंग संस्थानों के लिए भी अलग से आवेदन कर सकते हैं। कई कॉलेजों में प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है तो कुछ में जल्द शुरू होने वाली है। इनमे से ज्यादातर इंजीनियरिंग सस्थानो ने अपनी प्रवेश परीक्षाये अप्रैल एवं मई माह में रखी है।

स्टूडेंट्स अभी आईआईटी-एनआईटी के अतिरिक्त इन अन्य संस्थानों में प्रवेश के लिए आवेदन करने की जल्दी ना करें क्योंकि सभी संशानो में आवेदन की अंतिम तिथि बहुत आगे तक है और अभी उनके पास आवेदन के लिए पर्याप्त समय है। साथ ही वो पहले जेईई-मेन की परीक्षा दें और वे जेईई-मेन देकर अपने परिणाम के अनुसार ही आंकलन कर दूसरे कॉलेजेस के लिए भली-भांति सोच कर आवेदन करें।

नवजात बालिका का शव मिला

करौली, (निसं)। करौली सदर थाना क्षेत्र के रामपुर धावाई गांव में पुलिया के पास जंगल में नवजात बालिका का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सदर थाना पुलिस ने शव का करौली सामान्य चिकित्सालय में पोस्टमॉर्टम कराया। डॉक्टरों ने बालिका के स्टिल बॉर्न होने की संभावना जताई है। सदर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

करौली सदर थाना एएसआई रामवीर सिंह ने बताया कि करौली-गंगापुर सड़क मार्ग स्थित रामपुर धावाई गांव की पुलिया के पास जंगल में एक नवजात का शव पड़ा होने की सूचना मिली थी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और मौका मुआयना किया। बाद में नवजात के शव को करौली चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया, जहां बालिका के शव का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमॉर्टम कराया गया। पोस्टमॉर्टम में शव चार से पांच दिन पुराना बताया है। मेडिकल बोर्ड के सदस्य डॉ. विजय सिंह ने बताया कि मृत बालिका 28 से 30 सप्ताह की है। डॉक्टरर्स ने जांच में बालिका के मृत ही पैदा होने की संभावना जताई है। सदर थाना पुलिस ने नवजात के शव का पोस्टमॉर्टम के बाद अंतिम संस्कार कराया है।

12 फीट लंबा अजगर आने से हड़कंप मचा

कोटा, (निसं)। नांता इलाके में स्थित कुंद-कुंद कॉलोनी में उस समय हडकंप मच गया जब एक 12 फीट लम्बा अजगर कॉलोनी में आ गया। स्नैक केचर गोविंद शर्मा ने बताया कि कॉलोनी में करीब 12 फीट लंबा और 50 किलो वजन के अजगर को देखकर लोग दहशत में आ गए। लोगों ने अजगर को भगाने का प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हो पाए। इस दौरान कई बार अजगर वाहन की चपेट में आते-आते बच गया। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे और काफी मशक्कत के बाद अजगर का रेस्क्यू किया और लाड़पुरा के जंगल में छोडा गया। अजगर के रेस्क्यू के बाद स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली।

राशिफल

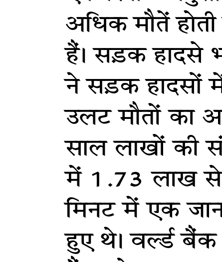

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 30 नवम्बर, 2024

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, विशाखा नक्षत्र दिन 12:35 तक, अतिगंड योग सायं 4:44 तक, शकुनि करण दिन 10:30 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज पितृकार्य अमावस्या है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:20 से 9:14 तक, चर 12:15 से 1:34 तक, लाभ-अमृत 1:34 से 4:10 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

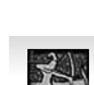

धनु
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

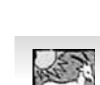

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

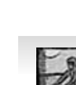

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

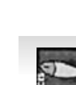

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।